



Mr.rohit pal singh

27 Oct 1986

01:43 PM

Una

Model: Web-MyKundli

Order No: 119499901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 27/10/1986
दिन _____: सोमवार
जन्म समय _____: 13:43:00 घंटे
इष्ट _____: 17:46:29 घटी
स्थान _____: Una
राज्य _____: Himachal Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 31:28:00 उत्तर
रेखांश _____: 76:19:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:24:44 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 13:18:16 घंटे
वेलान्तर _____: 00:16:06 घंटे
साम्पातिक काल _____: 15:39:52 घंटे
सूर्योदय _____: 06:36:24 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:40:39 घंटे
दिनमान _____: 11:04:15 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 09:56:30 तुला
लग्न के अंश _____: 17:49:05 मकर

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मकर - शनि
राशि-स्वामी _____: कर्क - चन्द्र
नक्षत्र-चरण _____: आश्लेषा - 3
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: शुभ
करण _____: गर
गण _____: राक्षस
योनि _____: मार्जार
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: डे-डेविड
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृश्चिक



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1908	कार्तिक	5
पंजाबी	संवत : 2043	कार्तिक	11
बंगाली	सन् : 1393	कार्तिक	10
तमिल	संवत : 2043	आइपसी	11
केरल	कोल्लम : 1162	तुलम	10
नेपाली	संवत : 2043	कार्तिक	11
चैत्रादि	संवत : 2043	कार्तिक	कृष्ण 9
कार्तिकादि	संवत : 2043	आश्विन	कृष्ण 9

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 9
 तिथि समाप्ति काल _____ : 18:12:59
 जन्म तिथि _____ : 9
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : आश्लेषा
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 21:48:12 घंटे
 जन्म योग _____ : आश्लेषा
 सूर्योदय कालीन योग _____ : शुभ
 योग समाप्ति काल _____ : 15:23:00 घंटे
 जन्म योग _____ : शुभ
 सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
 करण समाप्ति काल _____ : 18:12:59 घंटे
 जन्म करण _____ : गर
 भयात _____ : 44:22:41
 भभोग _____ : 64:35:40
 भोग्य दशा काल _____ : बुध 5 वर्ष 4 मा 12 दि

घात चक्र

मास _____ : पौष
 तिथि _____ : 2-7-12
 दिन _____ : बुधवार
 नक्षत्र _____ : अनुराधा
 योग _____ : व्याघात
 करण _____ : नाग
 प्रहर _____ : 1
 वर्ग _____ : मेष
 लग्न _____ : तुला
 सूर्य _____ : सिंह
 चन्द्र _____ : सिंह
 मंगल _____ : कन्या
 बुध _____ : मिथुन
 गुरु _____ : तुला
 शुक्र _____ : वृश्चिक
 शनि _____ : कर्क
 राहु _____ : धनु

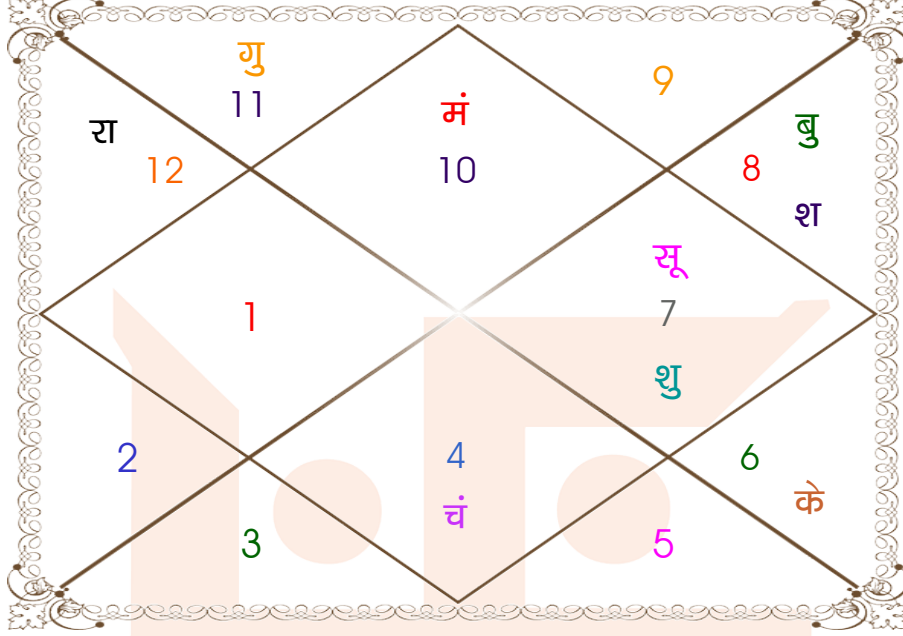


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

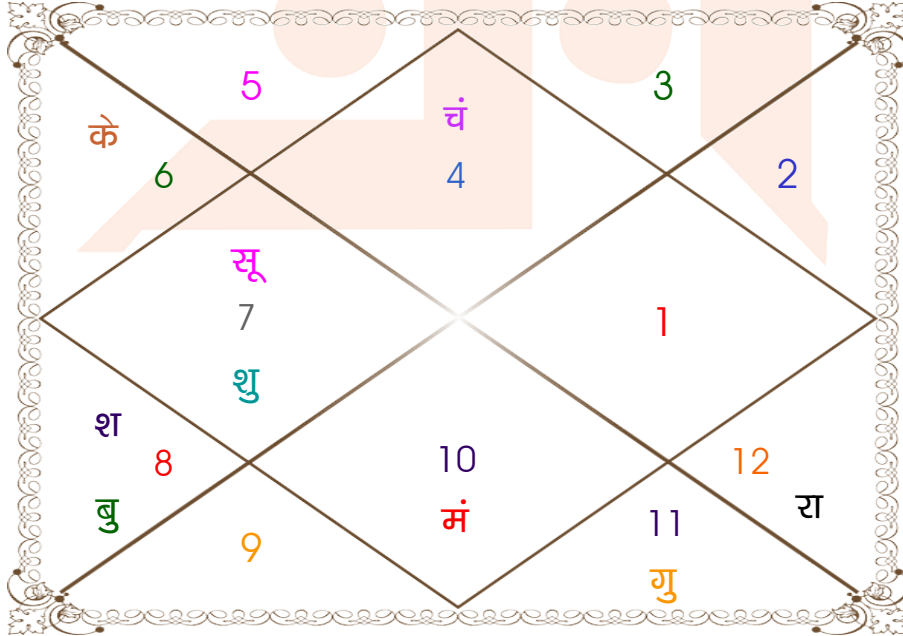


जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

रा			
गु			चं
मं ल			
	श बु	शु सू	के

लग्न कुंडली

		रा
		गु
चं		मं ल
के	सू शु	बु श

विंशोत्तरी
बुध 5वर्ष 4मा 12दि
बुध

27/10/1986

10/03/2095

बुध	09/03/1992
केतु	10/03/1999
शुक्र	10/03/2019
सूर्य	09/03/2025
चन्द्र	10/03/2035
मंगल	10/03/2042
राहु	09/03/2060
गुरु	09/03/2076
शनि	10/03/2095

योगिनी
भ्रामरी 1वर्ष 3मा 4दि
भद्रिका

31/01/2024

31/01/2029

भद्रिका	11/10/2024
उल्का	11/08/2025
सिद्धा	01/08/2026
संकटा	11/09/2027
मंगला	01/11/2027
पिंगला	10/02/2028
धान्या	12/07/2028
भ्रामरी	31/01/2029



FUTUREPOINT
Astro Solutions



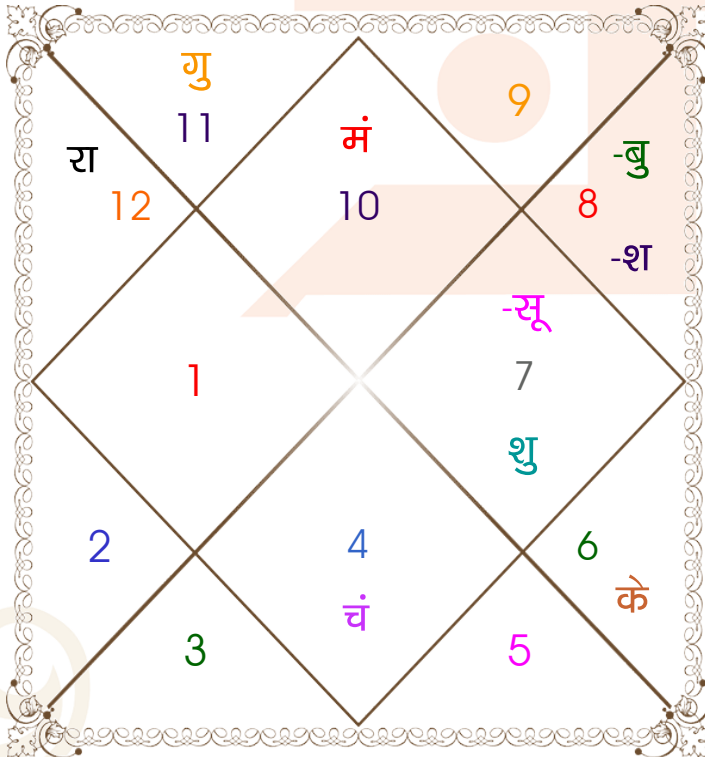
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मक	17:49:05	442:01:10	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	---
सूर्य			तुला	09:56:30	00:59:53	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	गुरु	नीच राशि
चंद्र			कर्क	25:47:28	12:26:24	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	स्वराशि
मंगल			मक	17:00:10	00:36:53	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	शनि	उच्च राशि
बुध			वृश्चि	03:22:48	00:39:06	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	सम राशि
गुरु	व		कुंभ	19:32:48	00:02:28	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	मंगल	सम राशि
शुक्र	व		तुला	24:02:21	00:26:49	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	स्वराशि
शनि			वृश्चि	14:10:03	00:06:17	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	राहु	शत्रु राशि
राहु			मीन	27:08:36	00:00:34	रेवती	4	27	गुरु	बुध	गुरु	सम राशि
केतु			कन्या	27:08:36	00:00:34	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	गुरु	शत्रु राशि
हर्ष			वृश्चि	26:10:48	00:02:47	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	गुरु	---
नेप			धनु	09:51:23	00:01:21	मूल	3	19	गुरु	केतु	शनि	---
प्लूटो			तुला	13:28:22	00:02:26	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	बुध	---
दशम भाव			वृश्चि	03:34:37	--	अनुराधा	--	17	मंगल	शनि	शनि	--

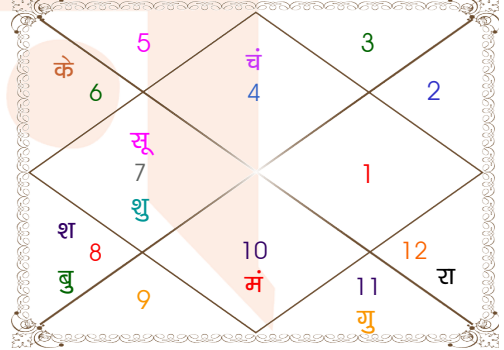
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:40:16

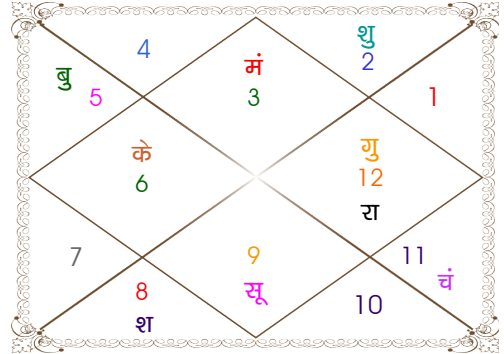
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मकर 05:26:40	मकर 17:49:05
2	कुम्भ 05:26:40	कुम्भ 23:04:16
3	मीन 10:41:51	मीन 28:19:26
4	मेष 15:57:02	वृष 03:34:37
5	वृष 15:57:02	वृष 28:19:26
6	मिथुन 10:41:51	मिथुन 23:04:16
7	कर्क 05:26:40	कर्क 17:49:05
8	सिंह 05:26:40	सिंह 23:04:16
9	कन्या 10:41:51	कन्या 28:19:26
10	तुला 15:57:02	वृश्चिक 03:34:37
11	वृश्चिक 15:57:02	वृश्चिक 28:19:26
12	धनु 10:41:51	धनु 23:04:16

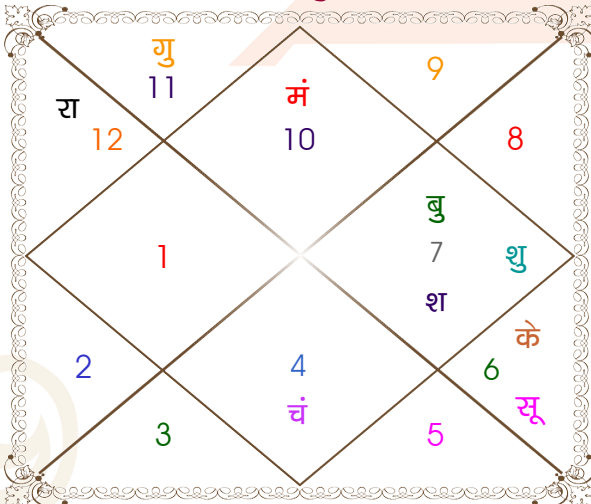
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	17:49:05
2	कुम्भ	29:40:01
3	मेष	05:41:04
4	वृष	03:34:37
5	वृष	27:03:40
6	मिथुन	20:12:00
7	कर्क	17:49:05
8	सिंह	29:40:01
9	तुला	05:41:04
10	वृश्चिक	03:34:37
11	वृश्चिक	27:03:40
12	धनु	20:12:00

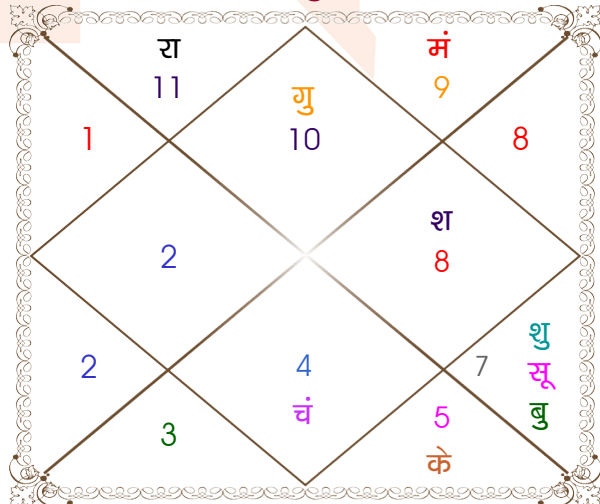
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 5 वर्ष 4 मास 12 दिन

बुध 17 वर्ष 27/10/1986 09/03/1992	केतु 7 वर्ष 09/03/1992 10/03/1999	शुक्र 20 वर्ष 10/03/1999 10/03/2019	सूर्य 6 वर्ष 10/03/2019 09/03/2025	चंद्र 10 वर्ष 09/03/2025 10/03/2035
00/00/0000	केतु 05/08/1992	शुक्र 09/07/2002	सूर्य 27/06/2019	चंद्र 08/01/2026
00/00/0000	शुक्र 05/10/1993	सूर्य 10/07/2003	चंद्र 27/12/2019	मंगल 09/08/2026
00/00/0000	सूर्य 10/02/1994	चंद्र 09/03/2005	मंगल 03/05/2020	राहु 08/02/2028
00/00/0000	चंद्र 11/09/1994	मंगल 10/05/2006	राहु 28/03/2021	गुरु 09/06/2029
00/00/0000	मंगल 07/02/1995	राहु 09/05/2009	गुरु 14/01/2022	शनि 08/01/2031
27/10/1986	राहु 26/02/1996	गुरु 08/01/2012	शनि 27/12/2022	बुध 08/06/2032
राहु 25/03/1987	गुरु 01/02/1997	शनि 10/03/2015	बुध 02/11/2023	केतु 08/01/2033
गुरु 30/06/1989	शनि 13/03/1998	बुध 08/01/2018	केतु 09/03/2024	शुक्र 08/09/2034
शनि 09/03/1992	बुध 10/03/1999	केतु 10/03/2019	शुक्र 09/03/2025	सूर्य 10/03/2035
मंगल 7 वर्ष 10/03/2035 10/03/2042	राहु 18 वर्ष 10/03/2042 09/03/2060	गुरु 16 वर्ष 09/03/2060 09/03/2076	शनि 19 वर्ष 09/03/2076 10/03/2095	बुध 17 वर्ष 10/03/2095 00/00/0000
मंगल 06/08/2035	राहु 20/11/2044	गुरु 27/04/2062	शनि 13/03/2079	बुध 06/08/2097
राहु 24/08/2036	गुरु 15/04/2047	शनि 08/11/2064	बुध 20/11/2081	केतु 03/08/2098
गुरु 30/07/2037	शनि 19/02/2050	बुध 14/02/2067	केतु 30/12/2082	शुक्र 04/06/2101
शनि 08/09/2038	बुध 08/09/2052	केतु 20/01/2068	शुक्र 01/03/2086	सूर्य 10/04/2102
बुध 05/09/2039	केतु 26/09/2053	शुक्र 20/09/2070	सूर्य 10/02/2087	चंद्र 10/09/2103
केतु 02/02/2040	शुक्र 26/09/2056	सूर्य 10/07/2071	चंद्र 11/09/2088	मंगल 06/09/2104
शुक्र 03/04/2041	सूर्य 21/08/2057	चंद्र 08/11/2072	मंगल 21/10/2089	राहु 28/10/2106
सूर्य 09/08/2041	चंद्र 20/02/2059	मंगल 15/10/2073	राहु 27/08/2092	00/00/0000
चंद्र 10/03/2042	मंगल 09/03/2060	राहु 09/03/2076	गुरु 10/03/2095	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 5 वर्ष 3 मा 25 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र 09/03/2025 08/01/2026	चंद्र - मंगल 08/01/2026 09/08/2026	चंद्र - राहु 09/08/2026 08/02/2028	चंद्र - गुरु 08/02/2028 09/06/2029	चंद्र - शनि 09/06/2029 08/01/2031
चंद्र 04/04/2025 मंगल 22/04/2025 राहु 06/06/2025 गुरु 17/07/2025 शनि 03/09/2025 बुध 16/10/2025 केतु 03/11/2025 शुक्र 24/12/2025 सूर्य 08/01/2026	मंगल 20/01/2026 राहु 21/02/2026 गुरु 22/03/2026 शनि 24/04/2026 बुध 24/05/2026 केतु 06/06/2026 शुक्र 11/07/2026 सूर्य 22/07/2026 चंद्र 09/08/2026	राहु 30/10/2026 गुरु 11/01/2027 शनि 08/04/2027 बुध 24/06/2027 केतु 26/07/2027 शुक्र 26/10/2027 सूर्य 22/11/2027 चंद्र 07/01/2028 मंगल 08/02/2028	गुरु 13/04/2028 शनि 29/06/2028 बुध 06/09/2028 केतु 04/10/2028 शुक्र 24/12/2028 सूर्य 18/01/2029 चंद्र 27/02/2029 मंगल 28/03/2029 राहु 09/06/2029	शनि 08/09/2029 बुध 29/11/2029 केतु 02/01/2030 शुक्र 08/04/2030 सूर्य 07/05/2030 चंद्र 24/06/2030 मंगल 28/07/2030 राहु 23/10/2030 गुरु 08/01/2031
चंद्र - बुध 08/01/2031 08/06/2032	चंद्र - केतु 08/06/2032 08/01/2033	चंद्र - शुक्र 08/01/2033 08/09/2034	चंद्र - सूर्य 08/09/2034 10/03/2035	मंगल - मंगल 10/03/2035 06/08/2035
बुध 22/03/2031 केतु 22/04/2031 शुक्र 17/07/2031 सूर्य 12/08/2031 चंद्र 24/09/2031 मंगल 24/10/2031 राहु 10/01/2032 गुरु 19/03/2032 शनि 08/06/2032	केतु 21/06/2032 शुक्र 26/07/2032 सूर्य 06/08/2032 चंद्र 24/08/2032 मंगल 05/09/2032 राहु 07/10/2032 गुरु 05/11/2032 शनि 08/12/2032 बुध 08/01/2033	शुक्र 19/04/2033 सूर्य 19/05/2033 चंद्र 09/07/2033 मंगल 14/08/2033 राहु 13/11/2033 गुरु 02/02/2034 शनि 10/05/2034 बुध 04/08/2034 केतु 08/09/2034	सूर्य 17/09/2034 चंद्र 03/10/2034 मंगल 13/10/2034 राहु 10/11/2034 गुरु 04/12/2034 शनि 02/01/2035 बुध 28/01/2035 केतु 07/02/2035 शुक्र 10/03/2035	मंगल 19/03/2035 राहु 10/04/2035 गुरु 30/04/2035 शनि 23/05/2035 बुध 14/06/2035 केतु 22/06/2035 शुक्र 17/07/2035 सूर्य 25/07/2035 चंद्र 06/08/2035
मंगल - राहु 06/08/2035 24/08/2036	मंगल - गुरु 24/08/2036 30/07/2037	मंगल - शनि 30/07/2037 08/09/2038	मंगल - बुध 08/09/2038 05/09/2039	मंगल - केतु 05/09/2039 02/02/2040
राहु 03/10/2035 गुरु 23/11/2035 शनि 22/01/2036 बुध 17/03/2036 केतु 08/04/2036 शुक्र 11/06/2036 सूर्य 30/06/2036 चंद्र 01/08/2036 मंगल 24/08/2036	गुरु 08/10/2036 शनि 01/12/2036 बुध 18/01/2037 केतु 07/02/2037 शुक्र 05/04/2037 सूर्य 22/04/2037 चंद्र 20/05/2037 मंगल 09/06/2037 राहु 30/07/2037	शनि 03/10/2037 बुध 29/11/2037 केतु 23/12/2037 शुक्र 28/02/2038 सूर्य 20/03/2038 चंद्र 23/04/2038 मंगल 17/05/2038 राहु 16/07/2038 गुरु 08/09/2038	बुध 30/10/2038 केतु 20/11/2038 शुक्र 19/01/2039 सूर्य 06/02/2039 चंद्र 08/03/2039 मंगल 29/03/2039 राहु 23/05/2039 गुरु 10/07/2039 शनि 05/09/2039	केतु 14/09/2039 शुक्र 09/10/2039 सूर्य 16/10/2039 चंद्र 29/10/2039 मंगल 07/11/2039 राहु 29/11/2039 गुरु 19/12/2039 शनि 11/01/2040 बुध 02/02/2040



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	9
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 3, 6, 9, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल



FUTUREPOINT
Astro Solutions

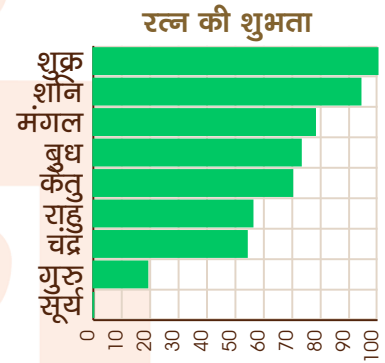


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	100%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
नीलम	शनि	94%	धनार्जन, स्वास्थ्य, धन
मूंगा	मंगल	78%	स्वास्थ्य, सुख, धनार्जन
पन्ना	बुध	73%	धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	70%	भाग्योदय, धनार्जन
गोमेद	राहु	56%	पराक्रम, धन
मोती	चंद्र	54%	दम्पति
पुखराज	गुरु	19%	धन हानि, व्यय, पराक्रम हानि
माणिक्य	सूर्य	0%	व्यावसायिक हानि, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	09/03/1992	12%	34%	78%	86%	19%	100%	94%	56%	70%
केतु	10/03/1999	0%	34%	84%	73%	19%	100%	81%	38%	83%
शुक्र	10/03/2019	0%	34%	78%	80%	19%	100%	100%	62%	77%
सूर्य	09/03/2025	25%	61%	84%	73%	31%	92%	81%	38%	58%
चंद्र	10/03/2035	12%	67%	78%	80%	19%	100%	94%	38%	58%
मंगल	10/03/2042	12%	61%	91%	61%	31%	100%	94%	38%	77%
राहु	09/03/2060	0%	34%	66%	73%	19%	100%	100%	69%	58%
गुरु	09/03/2076	12%	61%	84%	61%	44%	92%	94%	56%	70%
शनि	10/03/2095	0%	34%	66%	80%	19%	100%	100%	62%	58%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
शुभ
सम
अशुभ
शुभ

क्षेत्र

धन
शत्रु व रोग
दाम्पत्य कलह
दुर्घटना
व्यावसायिक उन्नति



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगे तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। उर्पयुक्त योग के प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु या अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात आप विवाह करेंगे तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा

जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में वासुकि नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए कभी दुःखमय हो जाता है। पारिवारिक सदस्यों से किसी समय थोड़ा मनमुटाव हो जाता है। भाई-बहनों से आंशिक रूप में दुःख उठाना पड़ता है। रिश्तेदार थोड़ा बहुत नुकसान पहुँचाते रहते हैं और मित्रगण से भी किसी समय जातक थोड़ी क्षति पाता है। घर में सुख शान्ति का आंशिक अभाव रहता है।

पूजा, पाठ, हवन, दान आदि धर्म कार्य में जातक को विशेष रुचि नहीं रहती है। भाग्योदय होने में आंशिक रूप से बाधाएँ आती हैं तथा नौकरी एवं व्यवसाय के क्षेत्र में किंचित संघर्ष करना पड़ता है और राजकीय सेवा के अवसर भी प्राप्त होते हैं तथा पराक्रम, यश, पद व प्रतिष्ठा के लिए आंशिक संघर्ष करना पड़ता है। जातक विदेश गमन करता है जिसमें थोड़ा बहुत कष्ट झेलना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक को शारीरिक रोग-व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। जिसमें सामान्य से विशेष खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है। कालान्तर में आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है।

इस योग के कारण जातक कानूनी दस्तावेजों पर भावुकतावश हस्ताक्षर करके आंशिक रूप में नुकसान पाता है और राज्य पक्ष से भी जातक को अल्पमात्रा में प्रतिकूल फल प्राप्त होता है और नौकरी व्यवसाय में निलम्बित होने का भय बना रहता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक अपने जीवन में बहुत सफलता प्राप्त करता है। विलम्ब से उत्तम भाग्य का निर्माण भी होता है और उन्नति के कई अवसर प्राप्त होते हैं।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अद्वारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।

8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है ।

आपकी कुण्डली में बुध और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें । पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें । शम्मी की समिधा से हवन करें । बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें । गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान्, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराकमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आधिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुख, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान् परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान्, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरधृति, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- सूर्य
(10/03/2019 - 09/03/2025)

सूर्य की महादशा 10/03/2019 को आरंभ और 09/03/2025 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 6 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य दशम भाव में अवस्थित है। सूर्य शक्ति, प्रभुत्व, या, ख्याति, और राजकीय अनुग्रह का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि दशम भाव व्यवसाय, प्रतिष्ठा, सम्पत्ति, प्राप्ति और कार्य के स्वभाव का सूचक है। अतः इस दशा में आपको व्यवसाय में लाभ तथा प्रतिष्ठा, सम्पत्ति तथा जीवन की सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपमें स्वास्थ्यलाभ की अद्भुत शक्ति है और आप किसी भी बीमारी से जल्द ही छुटकारा प्राप्त कर लेंगे।

अर्थ :

आप भाग्यशाली हैं आपको पर्याप्त संसाधनों की प्राप्ति होगी। आप स्वभाव से उदार व दानी हैं, इसलिये यदि आप पर्याप्त धन चाहते हैं तो अपने व्यय पर नियंत्रण रखें। आप अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आप पिता के कारोबार में शामिल हो सकते हैं और नौकरी तथा वाणिज्य-व्यापार से धन अर्जित कर सकते हैं। आपको सरकारी व्यवसाय से लाभ प्राप्त हो सकता है और कठिन परिश्रम से अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस दशा में आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी।

व्यवसाय :

आपको आपके सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। आप एक जन्मजात नेता हैं और संगठनों, निगमों या अन्य सरकारी एजेंसियों के प्रधान होंगे। आपको शक्तिशाली व आधिकारिक पद की प्राप्ति होगी। इस दशा-काल में आपको नियत आमदनी के साथ-साथ एक सुरक्षित कार्य मिलेगा। आप सैन्य, राजनीतिक, प्रशासकीय, तकनीकी तथा वैज्ञानिक सेवाओं में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। रत्न, पत्थर, संगमरमर, सोना, कोयला, अनाज आदि का व्यवसाय लाभदायक होगा। नौकरी पेशा लोग इस दशा के दौरान बहुत अच्छा करेंगे और उनकी पदोन्नति होगी। उच्चाधिकारियों के अनुग्रह की प्राप्ति और आमदनी में वृद्धि होगी। व्यवसायियों -व्यापारियों को यश और ख्याति तथा विरोधियों पर विजय की प्राप्ति होगी।

परिवार :

आप इस दशा में अपने बच्चों को प्यार देंगे और उनका ध्यान रखेंगे। उनके साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर होंगे। आप अपने परिवार तथा जीवन साथी के साथ सम्बन्ध मधुर रखेंगे। आपके मित्रों की संख्या बढ़ी होगी और आपका सामाजिक जीवन उत्तम होगा। अपना विचार दूसरों पर न थोपें। आपके जीवन साथी की आमदनी अच्छी होगी और उन्हें सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपकी माता को सुख प्राप्त होगा और साझेदारी में लाभ प्राप्त होंगे। आपके पिता भाग्यशाली होंगे और उन्हें धन की प्राप्ति होगी। आपके भाई-बहनों की

अवांछित यात्राएँ और व्यय होंगे। उन्हें सुख-सुविधाएँ और लाभ प्राप्त होंगे।

शिक्षा :

आप अपने अध्ययन में बहुत अच्छा करेंगे और हमेशा प्रथम स्थान प्राप्त करेंगे।
आपकी शारीरिक विज्ञान तथा कला में रुचि रहेगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



**महादशा :- चन्द्र
(09/03/2025 - 10/03/2035)**

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 09/03/2025 को आरंभ और 10/03/2035 को समाप्त होगी।

चन्द्र सप्तम भाव में अवस्थित है। सप्तम भाव कानूरी समझोते, साझेदार अर्थात् जीवन साथी, व्यापार, मुकद्दमें, विदेश में प्रभाव तथा वहां प्राप्त ख्याति और जीवन में खतरे का सूचक है। अतः दस वर्षों की इस अवधि में आपका जीवन सुखी और स्वस्थ होगा। आपका दाम्पत्य जीवन अनुकूल और आनन्ददायक होगा।

स्वास्थ्य :

चन्द्र की स्थिति से सप्तम भाव प्रबल हो रहा है। चन्द्र की प्रथम भाव या लग्न पर दृष्टि है, अतः आपका जीवन सुखमय तथा उत्तम होगा और किसी बड़े रोग या चोट की सम्भावना नहीं है।

अर्थ और सम्पत्ति :

सप्तम भाव में अवस्थित चन्द्र भाव को प्रबलित करता है जो साझेदार का भाव है। अतः दस वर्षों की इस अवधि में आपकी संपत्ति और आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी। आपका बैंक बैलेंस बढ़ेगा और आपको जीवन के सुखों की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

साझेदारी के व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपके व्यापार का विकास होगा और यदि नौकरीपेशा हैं तो जीवन में उन्नति के अवसर आएंगे और अपने व्यवसाय का आनन्द प्राप्त करेंगे। यदि व्यवसाय में हैं तो आपके मस्तिष्क में अनेक सुन्दर और अनुकूल व्यवसाय के विचार उभरेंगे जिन्हें चालू किये जाने पर आपको नाम मिलेगा। आप सामाजिक होंगे और व्यवसाय के क्रम में यात्राओं पर जा सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन अनुकूल और उत्तम होगा। आपके व्यक्तित्व और जीवन साथी के स्वास्थ्य में सुधार होगा जिससे आपको वैवाहिक जीवन का सुख मिलेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

मस्तिष्क का कारक चन्द्र आपको धार्मिक ग्रन्थों व पुराणों के अध्ययन की ओर प्रेरित करेगा। आपको उन ग्रन्थों के अध्ययन से आनन्द की प्राप्ति होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अंतर्दशा :- चन्द्र - चन्द्र
(09/03/2025 - 08/01/2026)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 09/03/2025 को प्रारंभ होकर 10/03/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 09/03/2025 को प्रारंभ होकर 08/01/2026 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है और लग्न पर उसकी दृष्टि है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन के खतरों का परिचायक है।

इस अवधि में आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और यात्रा में सफलता मिलेगी।

अगर आप अविवाहित हैं तो इस अवधि में विवाह हो सकता है। विवाहित जीवन सुखी रहेगा। विवाह होने पर लाभान्वित होंगे। साझेदारी के व्यापार में लाभ होगा; साझेदार से संबंध उत्तम रहेंगे। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्र के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - मंगल
(08/01/2026 - 09/08/2026)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 09/03/2025 को प्रारंभ होकर 10/03/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 08/01/2026 को प्रारंभ होकर 09/08/2026 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। लग्न में स्थित होकर मंगल की जन्मपत्रिका के 4, 7, 8 भावों पर दृष्टि है। मंगल ऊर्जा का कारक और अग्नितत्व का ग्रह है।

इस अवधि में आप साहसी, अकस्त्र, महत्वाकांक्षी होंगे। दुर्घटना से बचने के लिए सावधानी आवश्यक है। घरेलू जीवन क्रोध के कारण विचलित हो सकता है। आप मंगली हैं, अतः जीवनसाथी भी मंगली हो तो अच्छा रहेगा।

इस अवधि में अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए मंगल के वैदिक मंत्र के 10,000 जाप करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - राहु
(09/08/2026 - 08/02/2028)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 09/03/2025 को प्रारंभ हुई और 10/03/2035 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18 मास रहेगी। आपके लिए यह 09/08/2026 को प्रारंभ होकर 08/02/2028 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। राहु छायाग्रह है। इसका अस्तित्व नहीं है मगर शक्तिशाली होने के कारण महत्वपूर्ण है। अपने भाव की स्थिति और राशि के अनुसार यह शुभ या अशुभ होता है।

इस अवधि में आपको अचानक अप्रत्याशित समाचार प्राप्त हो सकते हैं। आप घर से दूर जा सकते हैं। प्रत्येक विषय में आपके विचार अधिकांश व्यक्तियों से भिन्न हो सकते हैं, जिससे आप आलोचना का शिकार बन सकते हैं। तृतीय भाव में राहु सामान्यतः भाइयों के संबंध में अशुभ समझा जाता है, अतः उनके साथ व्यवहार में सावधानी रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18,000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - गुरु
(08/02/2028 - 09/06/2029)**

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 09/03/2025 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 08/02/2028 को प्रारंभ होकर 09/06/2029 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। बृहस्पति शुभग्रह है और द्वितीय भाव में स्थित होकर कुंडली के 6, 8, 10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आपको हर काम में सफलता मिलेगी। धन का संचय होगा और पारिवारिक वातावरण सुख-सुविधा से युक्त होगा। व्यायाम द्वारा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कटुता में कमी आएगी। कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी। ईमानदारी की भावना बढ़ेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में गुरुवार के दिन प्रातःकाल दायें हाथ की तर्जनी में कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, बृहस्पति के मंत्र के 99 जाप करने के बाद धारण करें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - शनि
(09/06/2029 - 08/01/2031)**

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 09/03/2025 को प्रारंभ हुई और 10/03/2035 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 09/06/2029 को प्रारंभ होकर 08/01/2031 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। एकादश में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के लग्न, 5 और 8 भावों पर दृष्टि द्वारा अपना प्रभाव डाल रहा है।

इस अवधि में आपके बहुत से कर्मचारी और मातहत होंगे। मित्रों की संख्या कम होगी। आय संभवतः सरकारी माध्यम से होगी। राजनीति में सफलता और सम्मान प्राप्त हो सकते हैं। जीवन स्वस्थ, प्रसन्नतायुक्त और दीर्घायु होगा। शनि शक्तिशाली ग्रह है और जातक के धैर्य और कर्मठता की परीक्षा लेता है। भाग्योदय में देर हो सकती है मगर होता जरूर है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए निम्न उपाय करें :

1. नदी, तालाब, घर के मछलीघर आदि की मछलियों को आटे की गोलियां दें।
2. भोजन का पहला कौर गाय को दें।
3. पीपल को जल दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions

